# उत्तंग हुंकार

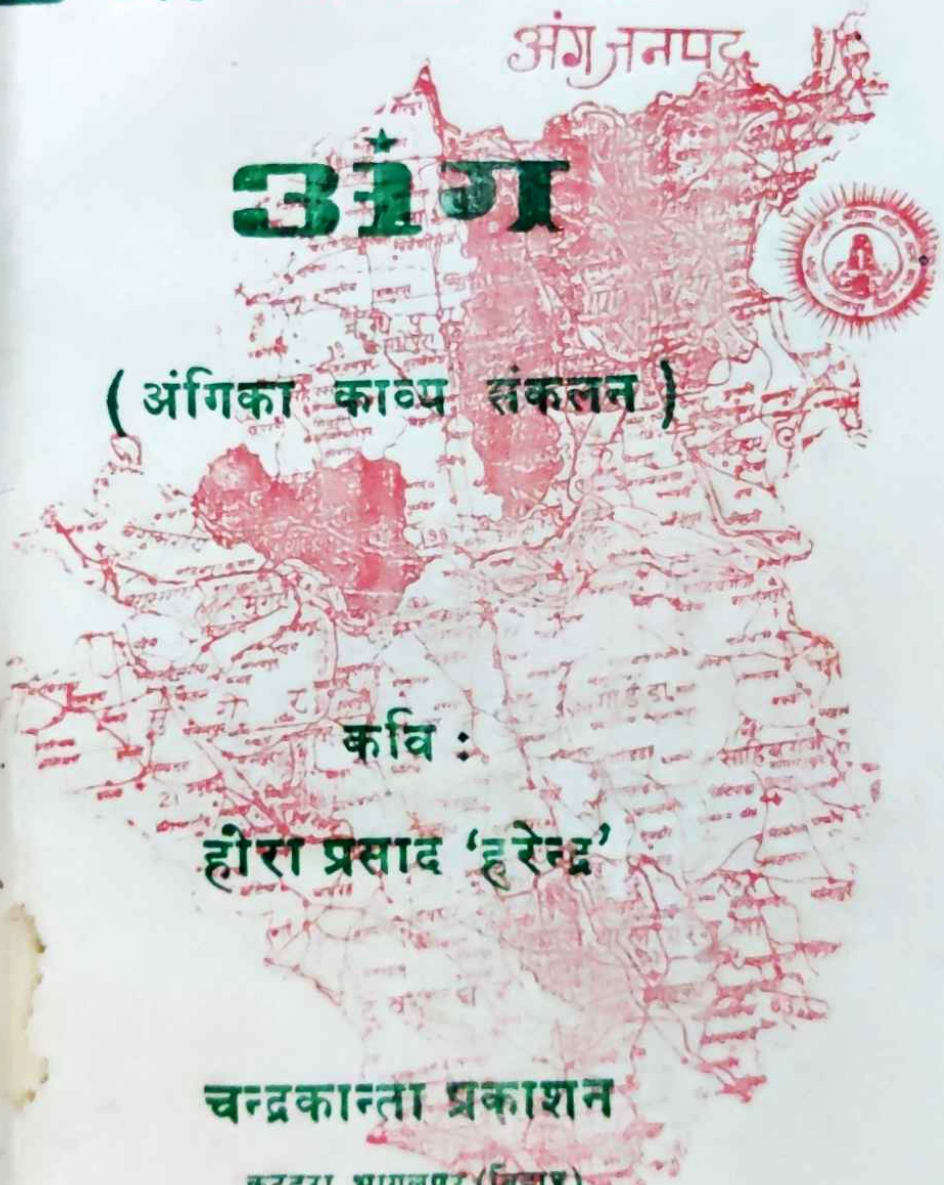


## अंग

( अंगिका काव्य संकलन )

कवि :

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'

चन्द्रकान्ता प्रकाशन

कटहरा, भागलपुर (बिहार)

# उत्तंग हमरऽ 'अंग'

## ( काव्य-संकलन )

★ रचनाकार ★

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'

चन्द्रकान्ता प्रकाशन

कटहैरा, भागलपुर

कृति :—
उत्तंग हमरऽ अंग

रचनाकार :-
हीरा प्रसाद हरेन्द्र
ग्राम+पो०—कटहरा
सुलतानगंज (भागलपुर)

प्रधानाध्यापक
प्रा० वि० अराजी दोस्तैनी
गोराडीह [भागलपुर]

प्रकाशन तिथि :—
स्वाधीनता दिवस २०००

सर्वाधिकार :—
रचनाकार

मुद्रक :—
राही प्रेस, संतनगर, हनुमान घाट
बरारी [भागलपुर]

प्रकाशक :-
चन्द्र कान्ता प्रकाशन, कटहरा

★ अगला प्रकाशन लेली सहयोग राशि १० [दस] टका।

# दू शब्द

पढ़ै-लिखै आरु गढ़ै वाला प्रवृति हमरऽ सभे दिनां छेलै। कभी-कभार कोय पत्र-पत्रिका म' रचना भेजी सें बाज नैं ऐयै। 'रचना लौटा रहे हैं, आप इसका अन्यत्र उपयोग करलें' अहिनों चिट्ठी के हमरा कमी नैं। रचनात्मक प्रवृति पर त' पल्ला पड़िये जाय, तइयो 'काम नया गीत बनाना, गीत बनाके जहाँ को सुनाना, कोई न मिले तो अकेले में गाना' हय गनमा के अनुशरण हम्म' खूब करियै। फिल्मी तर्जऽ पर गीत बनाय क' कीर्त्तन-भजन म' गाना हमरा बड़ी अच्छा लगै।

संघऽ द्वारा आयोजित हड़ताल आरु धरना म', नाटकऽ म' सभा-सोसाईटी म' कुछ सें कुछ गढ़ी क' पढ़ी देना हाय हमरऽ काम सें लोग खूबे परिचित छेलै। 'चकोर' जी के नाम वर्षऽ सें सुनियै। बड़ऽ आदमी के आश करियऽ पास नैं जइयऽ, मनेमन गुनियै। देवाल म' लगै लाक ईटऽ सड़कऽ पर नैं रहै छय, हाइयो बात नै भूलीयै होनी बास्तें सभ्भे दरवाजा खुल्ले रहै छय। एक दिनां गाँम्हैं के एक ठो अनुरंजन कुमार सिंह नामक युवक दू ठो रचना आरू 'अंग-माधुरी' के वार्षिक चन्दा हमरा सें मांगी कुन्दन अमिताभ हाथें चकोर जी के पास भेजी देलकै। साक्षरता गीत अंगमाधुरी सितम्बर ६७ अंक म' छपथैं हमरऽ खुशी मनऽ म' समाब नैं लागलै। बादऽ म' ढेरी कविता कहानी अंगमाधुरी म' छापी-छापी चकोर जी जे हमरऽ मऽन बढ़ैलकै हाय आभार व्यक्त करै लें खोजलहों शब्द नै पावै छी।

अनुरंजन कुमार सिंह रं दोसरऽ गाँम्हैं के युवक प्रमोद प्रताप सिंह भागलपुरऽ के अंग महोत्सव में 'बगुला' के सम्पादक रामावतार राही जी सें परिचय कराय जे उपकार करलकै हौव भुलैलऽ जाय वाला नैं छय। राही जी के सम्पर्कऽ में एथैं आमोद जी, सरल जी,

दिलबर जी, पतझड़ जी रं ढेरों कविगण आपन्हैं भेट' सागलै। कवि गोष्ठी कहिनों होय छै, २६ जनवरी ६८ क' पहिलऽ बार सरल जी के आवासऽ पर देखैल मिललै। हर गोष्ठी म' दोसरऽ-दोसरऽ कविता सुनाबै के ललक जागलै। संकलन वास्तें हाय कविता पुंज वह' प्रयासऽ के परिणाम छिकै।

'हाय कढ़ियां रास्ता धरनें छऽ' कही-कही ब्रह्मदेव नारायण 'सत्यम' आगू बढ़ै म' अच्छे योगदान देनें छय। 'बिना कविता संकलन के कवि की, हरऽ बिना हरवाहा का ?' दिलबर जी नें हय रंग ललकारी, प्रीतम अवस, डा० राजेन्द्र प्रसाद मोदी आरू बाबा उमानाथ पाठक नें कविता सराही-सराही संकलन निकाले वास्तें काफी प्रेरित करलं कं। अंग प्रदेशऽ के नवशा उपराय म' अभिन्न हृदय उमेश कुमार सिंह काफी परेशान होलै, लेकिन अंग जनपद के बनले ब्लौक दं क सरऽ जो परेशानी दूर करी मनऽ जे हर्षलकं हाव अवर्णय छय।

प्राथमिक शिक्षक होला के नातें विद्यालय परिवेशीय बातऽ क' समावेश संकलन म' ढेर होल, छै। गांव-घरऽ सें ढं कं देश-विदेशऽ के बात आरू पड़ोसी घुसपैठी के ऐंठी तोढ़ौ सें बाज नैं एलऽ छियं। अंग क्षेत्रीय धरती के धूल फांकी-फांकी भीतर-बाहर आरू आगू-पाछू झांकी-झांकी, बीतलऽ बातऽ क दिल-दिमागऽ म टांकी-टांकी संकलन तैयार करी, डा० इन्दु भूषण मिश्र 'देवेन्दु' जी के कर-कमलऽ म' समीक्षार्थ धरी हम्मं कृतार्थ होय गेलों।

हमरा यहां तक पहुंचाबै म' जिनकऽ जत्त सहयोग मिललै उनका प्रति ओतने आभार प्रकट करी पहिलऽ प्रयास के पहिलऽ फूल 'उलंग हमरऽ अंग' आगू करी अपनां क' हम्मं' धन्य-धन्य मानै छी।

—हरेन्द्र

# जहाँ जे छय


| क्रमांक | शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| १ | सरस्वती वन्दना | १ |
| २ | माय भगवती | २ |
| ३ | उत्तंग हमरऽ अंग | ३ |
| ४ | बिहारऽ के महिमा | ५ |
| ५ | गामऽ के खूबी | ७ |
| ६ | किसान देशके जान | ८ |
| ७ | वर्ग पाँच छय शिक्षक एक | ९ |
| ८ | गेहूँ के वितरण झगड़ा के घार | ११ |
| ९ | खूबे पेड़ लेगाक | १२ |
| १० | हमरऽ भारत देश महान | १४ |
| ११ | ऐलै बसन्त | १९ |
| १२ | भौंरा | २० |
| १३ | भ्रमण | २२ |
| १४ | बाबा अजगैबी | २४ |
| १५ | बच्चा पढ़ाबऽ निरक्षरता भगाबऽ | २५ |
| १६ | साक्षरता गीत | २५ |
| १७ | आपरेशन विजय | २६ |
| १८ | मट्ठा पीबं फूकी-फूकी | २७ |
| १९ | उखड़ी मं मूड़ी | २९ |
| २० | वोट | ३२ |
| २१ | चुनावी माहोल | ३३ |

| | | |
|---|---|---|
| २२ | होनी | ३४ |
| २३ | साँपऽ छुछुनरी बाला छऽ हाल | ३५ |
| २४ | वाजीव बात | ३७ |
| २५ | जों तोंय चाहऽ | ३८ |
| २६ | बुड़बक के धऽन | ३९ |
| २७ | बेरोजगारी मिटइबै | ४० |
| २८ | स्वदेशी सपना | ४१ |
| २९ | स्वदेशी अपनावऽ | ४४ |
| ३० | परिवार नियोजन | ४५ |
| ३१ | भावना | ४६ |
| ३२ | अबरी झरियाँ लेलकै जान | ४७ |
| ३३ | आरति गीत/भोला के दुअरिया | ४८ |


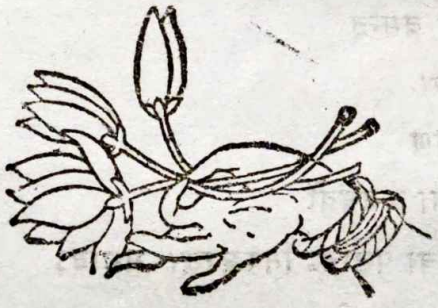

# समर्पण

## परम पूज्य माता-पिता
## के चरणारविन्दऽ म'

जिनी अभाव म' जीबी - जीबी,
फाटलऽ भाग्य क' सीबी - सीबी,
बाधा सें हरदम लड़ी - लड़ी,
गोसांय क' पूजी घड़ी - घड़ी,
सुनाय — सुनी सब खरीं खोटी,
दाँतऽ के रस घोटी - घोटी,
ध्यान धरी पढ़लक — लिखलक।
हेमरा अहिनऽ काबिल बनलक॥

-हरेन्द्र

# अभिमत

कवि दू तरह के होय छै । एक जोनें स्वान्तः सुखाय होय क' काल्पनिक आरो दार्शनिक जगत में विचरण करीं क' दुनिया क' आपनऽ संदेश दै छै आरो दोसरऽ हुनी जौने बहुजन हिताय आरो बहुजन सुखाय लिखै छै।

पहलऽ श्रेणी के कवि जहाँ आसमान म' उड़ै छै वहाँ दोसरऽ जमीन सें जुड़ै छै । कविवर श्री हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' जी क' दोसरऽ श्रेणी म' राखै छियै । काल्पनिक जगत सें दूर रही क' वास्तविकता क' आपनऽ पंक्ति म' बान्है के हिनका म' अद्भुत क्षमता छै । समाज के विकृति सें छटपटैलऽ हिनी जीवन के कोय अंग क' छुवैं नैं छोड़ल' छऽत । साक्षरता, बेरोजगारी, परिवार नियोजन नैं हिनी देश के गौरव गान के साथे-साथ भोला बाबा क' आपनऽ अरज सुनाय क' नारायण जी के आरति भी उतारै छऽत । यह' नैं 'अबरी भरियां लेलकै जान' म' हिनी किसान आरो मजदूर के दुख-दर्द बांटै छऽत । बेटी बिहा म' जहाँ दहेज के परेशानी छन वाहीं वोट, चुनाव आरो घुसखोरीं पर भी हिनी करारा चोट करलै' छऽत । 'हमरऽ भारत देश महान' म' प्राकृतिक सौन्दर्य देखथैं बनै छै । फूल, तितली, बंदर, भालू, हंस आरो कत' जीव-जन्तु के वर्णन में बड़ी मनोहारी दृश्य उपस्थित करल' छै ।

छन्द में शब्द संयोजन के बड़ा महत्व छै । शब्द सौष्ठव भी कविता के प्राण होय छै । जहां तक हुव' कविता म' सरल के साथ कोमल शब्द के प्रयोग सें जनमानसें ओकरा लोकी लै छै । रचना त' सोनऽ रंग लागै छै, जों सोहागा के प्रयोग हुव' त आकरऽ चमक बढ़ी जाय छै ।

जमीन सें जुड़लऽ ऐन्हों प्रकाशन लेला जनकवि श्री हीरा प्र० हरेन्द्र के हम्म' अभ्यर्थना कर छों आरो आशा करै छो कि 'उत्तंग हमरऽ अंग' रंग आरो रचना सें अंगिका के भंडार भरते रहतात ।

—गुरेश मोहन घोष 'सरल'
महामंत्री,
अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच

# परिमिति

— डॉ॰ तेजनारायण कुशवाहा

काव्य के दू पक्ष होय छै —भाव पक्ष आरो कला पक्ष । पहिलऽ छेकै ऊचऽ-ऊचऽ मानसी भाव आरो विचार, मनन चिंतन, सच्चाय के वर्णन आरो दोसरऽ छेकै ओकरा खोले के ढंग,तरीका ।साहित्य के भाषा में हौ ढंग या तरीका शैली कहाय छै । हम्में यहाँ कवि रत्न हीरा प्रसाद "हरेन्द्र" के उत्तंग हमरऽ अंग के दून्हू पक्षऽ के मिलल्हऽ जुलल्हऽ रुप पर, समझऽ, एकदम हल्लुक नजर देछी ।

'उत्तंग हमरऽ अंग' कविवर हरेन्द्र के तेंतीस कविता रों पहिलऽ अंगिका काव्य संग्रह छेकै । शीर्षक 'उत्तंग हमरऽ अंग' संग्रह के यहे नाम के एक सुन्दर कविता पर देलऽ गेलऽ छै । किताब के शीर्षक सें अंग के महिमा—अंग देश के गौरव गरिमा व्यंजित होय छै । ई शीर्षक दे कें तीन-चार टा कारण हमरा लौकै छै ।एक कारण कवि हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' के अंग प्रदेश के निवासी -अंग वासी होबऽ हुनका में अंग के माटी लेली अपार श्रद्धा आरों पूजा के भाव छै।

दोसरऽ कारण 'हरेन्द्र' के मातृ भाषा माय के बोली अंगिका होबऽ,-अंगिखै में कविता करबऽ, जे अंगिका(प्राचीन नाम आंगी) अंग प्रदेश के भाव आरो विचार खोलै वाली भाषा छेकै ।

तेसरऽ ई संग्रह में यहे नाम के एक मुख्य कविता के लगबऽ ।

चौथों, ई संग्रह क जों देश-वर्णन काव्य मानलऽ जाय त यें में 'उत्तंग हमरऽ अंग', बिहार के महिमा आरों हमरऽ देश महान, के अलावा गाँमों के गीत कहबऽ ।

कोय रचना के शीर्षक लगावै में जे परम्परा आबी रहलऽ छै, वहे परम्परा क कविएं पालन करनें छै ।

रचना कुल विषय वैविध्य में आवै छै । यें में अपभ्रंश काव्य रऽ परम्परा में देश-वर्णन के भीतर 'उत्तंग हमरऽ अंग' बिहार के महिमा, 'गाँवों के खूबी' हमरऽ देश महान आरों भ्रमण गीत आवै छै, जें में कवि के राष्ट्र लेली लगाव आरो भक्ति भाव झलकै छै ।

देवी-देवता के भक्ति, सुमिरण, आराधना आरो पूजा भारतीय अध्यात्म संस्कृति के एक अंग छेकै।

एक लम्बा परम्परा में माय सरस्वती, भगवती, भोला बाबा, लोक देवता के रूप लेनें छै। काव्य कृति के शुरू आत आरो अंत में मंगलाचरण आरों भरत वाक्य नाकी फनु बीचां में 'अजगैबी' जेन्हो आध्यात्मिक गीत के योजना यह' संस्कृति क दर्शावै छै।

कवि युगऽ के नगीच छै। वर्त्तमान के संगे-संगे चलबऽ अपनऽ धर्म मानै छै। जेन्हौं साक्षरता गीत लिखनें छै वह' रंग चुनाबा माहौल, परिवार नियोजन, बेरोजगारी, पर्यावरण आरनी कविताके संग्रह में स्थान मिललऽ छै।

'उत्तंग हमरऽ अंग' के कविता प्रगीत काव्य के भीतर मानलऽ जाय पार'। वैसें त'; यें में भावातिरेक के बहाव के अभाव खटकै छे। प्रगीत के देह संगीत आरों कवि के भावातिरेक या आत्म निवेदन ओकरऽ आत्मा होय छै। गीत में खुशो के फैलाव मिलै छै। नीजीपन त' रहै छं, बाकिर रागात्मकता रहै छै। गामों के खुशी, माय भगवती, सरस्वती वन्दना साक्षरता, भावना आरनी गीत उदाहरण लेली लेलऽ जाय पार' सक्षिप्तता के संगें-संग एक अन्विति लागलऽ छं यें सब में। संग्रह के गीत में विविधता छं,बाकिर केन्द्रीय भाव में सभै समान छै।

गीत के लोक गीत आरों साहित्यिक गीत ई दू-- टा रंगों में उत्तंग हमरऽ अंग के गीत लोक गीत में गन्ना आवै छै। अंगिका के आपनों लोक गीत के परम्परा सें भिन्न साहित्यिक गीत के परम्परा के बिरवा २०वीं शताब्दि के ५वां दशक में अँखुवैलै।आब त फूल, कोंढ़ी आरो फलो लाग लागलै। तब, हम्म' मानै छीं कि अंगिका साहित्यिक गीत अंगिका लोक गीत सें फुटलै।

गौरव होय छै कि 'हरेन्द्र' रं रचना कारें अंगिका साहित्यिक

गीत के पुँज लगावैं में आपनों गीत के पौधा दै रहेलऽ छै।

मॉनसर्गस्कायें ( Monssorgsky ) कहनें छै--

"कला अपनें आप में साध्य नैं मानवता के संदेश रों साधना छेकै—Art is not am end it Selfbul a Meanse of Addressig Humanity"

कबिरत्न 'हरेन्द्र के 'उत्तंग हमरऽ अंग' के कविता एकरे व्याख्या छेकै। हम्में कबि आरो हुनकऽ कृति के स्तुति करै छियै।

डॉ० तेज नारायण कुशवाहा

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिल भारतीय अंगिका साहित्य, कला मच, भागलपुर

---

आग कवि 'हरेन्द्र' जी के गढ़लऽ संग्रह 'उत्तंग हमरऽ अंग" देखै के मौका मिलल। हलांकि जेरबंत सिनी होला के कारण चोपाल मं बैठी क हिनकऽ रचना सुनी क खूबे हसलऽ ठठैलऽ छियै, लेकिन आय इ बातऽ केखुशियाली छं कि आब' इ अवसरऽ के लाभ ढेरी लाग उठेत. कखनु मंदिर-थानों मं बठलऽ रंग लाग छय त' कखनु इसकुलऽ के चहार दिवारो मं ढुकलऽ रंग बुझावं छय। कहीं समाजऽ के भीतरलका--लुकैलका बात सुनै ल' मिले छय त' कहीं राजनितीहो के कोख झलकै छे, त स्वास्थो के चर्चा आरु गामऽ - घरऽ के रीति रिवाजऽ पर प्रहार भी। कुल मिलायक' अंगिका माटी के खानदानऽ के गॅध निकल छय ई म ,नब न' मट्टा फुँकी –फुँकी. पिय के बात छय। हमरा नजरऽ मं है प्रयास अंगिका जनपद कं हरेन्द्र जी के उपहार छेकै।

ब्रह्मदेव नारायण सत्यम्

एम० एस-सी०, एम०एड०

प्रतिनियोजित व्याख्याता

रायकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भागलपुर

हम्म श्री हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' के इ काव्य संकलन 'उत्तंग हमरऽ अंग के अधिकतर रचना क' अलग-अलग पत्र-पत्रिका म' छपलऽ रुपऽ म' आरु खुद कण्ठ स्वर म' श्रव्य रुपऽ म' पढ़ै-सुनै के मिललऽ मौका पर काव्यानन्द म बारम्बार सराबोर—भावविभोर होय चुकलऽ छौं। ऐ क्रमऽ म' आनन्दातिरेक म अपना मुँहों सें अनायास निकललऽ ऐन्हों वाह! वाह! जेकरा पर पाठक-श्रोता के आपनऽ कोय वश नैं रहै छै, सुकवि के रूपऽ म हीरा बाबू के सामर्थ्य क' रेखांकित करै छै। अद्भुत शब्द संयोजन के साथे साथ विषय वस्तु भी राष्ट्रीय, स्वदेशी, सामाजिक, सांस्कृतिक, लौकिक, पौराणिक आदि बहुआयामी संदर्भ क' स्पर्श करतें हुव' सटीक प्रासंगिकता के साथ हिनकऽ कवि कर्म के एत्त व्यापक फलक सामनें रखै छै कि कोय भी भाव प्रबुद्ध पाठक, श्रोता अंगिका के भावी सिद्धहस्त आरु सामर्थ्य वान कवि के रुपऽ म' हिनकऽ विकास के प्रति आश्वस्त हुव पारै। अंगिका के ढेरों कवि क सीधे सुन के मौका हमरा मिललऽ छै। ओकरा सें ज्यादा कवि के अंगिका रचना क' पढ़ै के सौभाग्य मिललऽ छै, लेकिन सरल—सुबोध प्रवाह के साथ भाषा आरु भाव के ऐन्हों मणि-कांचन योग कम्मैं देख म' ऐलऽ छै।

हिनकऽ हर रचना म' लोका भिमुखता के जे धारा सतत प्रवहमान छै, चाहे उ स्वदेशी के प्रश्न पर हुव' या तिलक-दहेज प्रथा, प्रचलित शिक्षा नीति, प्रशासनिक/राजनैतिक भ्रष्टाचार, समाज म' व्याप्त अंध विश्वास, पश्चिमके आक्रामक बाजारवाद हुव या तेजी स फैलो रहलऽ अप संस्कृति हुव', आरु प्रखर, सटीक आरू प्रासंगिक होय क उभर आरु पूरा अंग क्षेत्र के आप्लावित करी क' दूर-दूर तक फैलो जाय, वहं' हमरऽ मंगल कामना आरू दिली ख्वाहिश छै।

गोरे लाल मनीषी

२—११—२०००

# पुरोवाक्

—डॉ० इन्दु भूषण मिश्र 'देवेन्दु
एम० ए० (त्रय), पी-एच० डी०, बी०एड्

सत्साहित्य देश आरु काले लौ एक बहुत बड़ऽ उपलब्धि होय छै। एकरऽ रचना कोय साधारण बात नञ्। एकरा सें देश-काल आरु पात्र के असलियत के त' पता चलबै करै छै साथें साथ ओकरे में ओकरऽ समाधान भी देलऽ रहै छै। ऐसनऽ साहित्य सभ्भे कवि—साहित्यकार नञ् लिख' पार। इ लेली कि ओकरो पाछू रचनाकारऽ के आपनऽ एक बहुत बड़ऽ साधना छिपलऽ रहै छै। रचनाकार परिवेश आरु संस्कार सें विषय क' आत्मसात् करी क' ओकरा संस्कारित करै छै आरू फिरु समाज के मापने परोसै छै।

आय हम्म' सनी जे संस्कृति में पली रहल छियै आरु जे संस्कृति आय के समाज म' पनपी रहलऽ छै, इ केकरो सें छिपलऽ नञ्। इ ले ली आय के अपसांस्कृतिक माहौल में जे रचनाकार सत्साहित्य रचै म' लागलऽ छऽथ उ सभ्भे हमरा दृष्टि सें, वन्दनीय आरु स्मरणीय छऽथ।

सत्साहित्य लेखन म' अंग जनपद के भी आपनऽ स्थान छै। एकरा म' तनियो टा सन्देह नञ् कि अंग जनपदीय रचनाकार के एक बहुत बड़ऽ हिस्सा अभियो तांय प्रचार-प्रसार सें आपना क दूर रखलें छऽथ, मतर इ ठीक नञ्। हमरा सनी के भी दायित्व बनै छै कि हुनका आय प्रचार—प्रसार म' लाबियै। हुनका जनता-जनार्दन आरु पाठक वर्ग सें जोड़ियै।

हमरा आय जहाँ तांय याद आवै छै कि अंगिका साहित्य के रंगमंच कला सें हमरऽ रचनाकार भाय सिनी इ-दिशा में चेतलऽ छऽथ आरू अब' हुन्नीं सभ्भे जनता-जनार्दन आरु पाठक वर्ग सें भी आपना क' जोड़लकऽ छऽथ।

कवि श्री हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' एक ऐन्हें सत्साहित्य-कार छऽथ जे अंगिका भाषा—साहित्य क' जन—जन तक पहुँचावे लौ, एकरऽ सत्साहित्य सें सबक' अवगत करावै लौ कमर कसनें छऽथ।

हिनकऽ काव्य-साहित्य के विषय कोय परी कथा नञ्, बिल्कुल हमरा तोरा बीच के छै। गाँव—समाजऽ म जे आय देखय छियै बस वहे'। इ ले लौ हिनकऽ रचना-साहित्य कोय फुहड़ प्रयास नञ् मानलऽ जाय पार'। हिनकऽ रचना-साहित्य आपनऽ पाठक लौ एक सत्परिवेश क गढ़ै छै जेकरा सें समाज के हर वर्ग आय अपना ले लौ कुछ नञ् कुछ अवश्य पावय छै

कवि हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' जी पेशा सें शिक्षक छऽथ। इ ले लौ हिनकऽ हरेक रचना शिक्षाप्रद होय छै। बाल-बुतरु कालह कऽ भविष्य छै। इ ले लौ हिन्हीं ओकरा कुच्छू अवश्ये समाज-देश आरू मानवता के रक्षा ले लौ सिखावं, पढ़ावै चाहै छऽथ। इप्रयास श्लाघनीय छै।

हिनकऽ इ काव्य-संग्रह में जे भी रचना छै सबके सब साफ-सुथरऽ आरु सत्साहित्य के रूपऽ में देखलऽ जाय पार'। एना त' साहित्य के अरथे होय छै सबके हित ले लौ रचलऽ

रचना-संसार। मतर 'सत्' शब्द के जोग सें एकरऽ रूप आरु बढ़ी जाय छै। हमरा दृष्टि सें त' 'सत्' वहे' रचना होवै पार' जे 'शिव' आरु 'सुन्दर' छै । 'शिव' के अर्थ यहां 'कल्याण' आरु 'सुन्दर' के अर्थ मन क' हरै वाला ले लऽ जाय पार'।

भाय 'हरेन्द्र जी के रचना म' व्यंग्य आदि जे भो काव्य घटक - तत्त्व छै सभ्भे 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के प्रकाशऽ सं दूध नांखी साफ-उजरऽ, झकमक करी रहलऽ छै।

पुस्तक के प्रारम्भ 'सरस्वती वन्दना' सें होय छै आरु अन्त भोला बाबा के गीतऽ स'। कहै के मतलब कि कवि आध्यात्मिक-चेतना सम्पन्न कवि छऽथ। जे आय ले ली बड्डी कठिन संस्कार छै। हिन्हीं आपनऽ हर रचना के द्वारा जे सत्य क' राखैके कोशिश करलकः छःथ उ हमरा सब बुद्धिजीवी क' कहीं नञ कही सें सोंचे ली अवश्ये मजबूर करै छै।

दुनिया के गुरू कहलावै वाला आय खुद्दे भारतवासी कहाँ जाय रहलऽ छै ई कवि दृष्टि म' चिन्तनीय छै। कवि यही संग्रह म' एक जगहऽ लिखनै छै—

अनीति, अन्याय आरू आसुरी माया,
हेकरऽ मकड़जाल देखि कल्पै छै काया,
मोह-पाश काटे वाला, शक्ति के वरदान द'।

सच्चे, आय चारहूं तरफ अनीति, अन्याय, आरू आसुरी प्रवृत्ति के मकड़जाल बिछलः छै। कोय बचावै वाला नञ। सबके सब एकरऽ दास बनी गेलऽ छै। आखिर ऐकरा जब तांय हम्म' सनी दूर नञ करबं तब तांब भला केना क' भारत खुशहाल होतय।

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' जो आय के व्यवस्था, शिक्षा,

संस्कार, राष्ट्रशक्ति सब सें दुखी छै। कहियो कोय गाँधी के आदर्श आरू मर्यादा के रक्षा करै वाला नञ्। हिनकऽ स्वदेशी सपना आय चकनाचूर होय रहलऽ छै। अंग्रेजियत आय सभ्भे पर हावी छै। कवि उक्ति म' कुछु बानगी आपने सनी भी देखिए—

बापू जी के स्वदेशी सपना, भैले चकनाचूर
विदेशी के चंगुल में तड़पै, सब किशान-मजदूर।

★ ★ ★

हाय इहै छेलै बापू के ख्वाब।
लूट पाट करी बनें नवाब॥

या फिरु—

आय सत्य-अहिंसा, धरम छोड़ि क' मिथ्या क' अपनै लां
बड़का-बड़का के लोक-लाज हम, सभ्भे टा बिसरैलां,
बिन मतलब वाला झूठ बात म' झूठे कसमो खैलां,
झगड़ा-झंझट आरु निन्दा म बेशो समय गमैलां।

निस्सन्देह, अयके 'युगसत्य' हमरा सब क इ सोचय लो मजबूर करीं रहलऽ छै कि आखिर हम्में आय जाँव त जाँव कहाँ?

एक सत्साहित्यकार के हैसियत सें कवि एकरऽ यथा-संभव जवाब भी दैय क कोशिश करै छथ। कवि वाणी छै-

सोचो भैया अभियो सभ्भै/विदेशी क ठुकराबऽ।
घर के काम, खानदानी पेशा/अपना, सब अपनाबऽ।
बढ़िया-घटिया जहिनों भी छै/स्वदेशी हमरऽ शान।
स्वावलम्बी होल्हैं स आपन/भारत देश महान।

सच, जब तांय हमरा सनीं के ऊपर सें विदेशा पन दूर नञ होतय, आरु हम्में सभ्भे अपनऽ खानदानी पेशा क'

भरपूर श्रद्धा, निष्ठा आरु विसवास के साथे नञ्‍ अपनैबय तब तीय हमरा सनो के कल्याण नञ्‍ । देखा-देखी सें हमरऽ कल्याण नञ्‍ होव' पार' । स्वावलंबन के पाठ पढ़ें वाला ही देश क' महान् राखै पार' ।

'स्वदेशी ग्रहण' हमरऽ आय के लाचारी नञ्‍, जरूरत छै । बिना एकरऽ आय हमरऽ समाज में शान्ति नञ्‍ आवें पार' । कवि इ सन्दर्भ म' सभ्भे क' बिल्कुल साफ-सुथरा सलाह दै छै कि--

स्वदेशी अपनाबऽ हो भैया, स्वदेशी अपनाबऽ ।
देश के दुश्मन सदा विदेशी ओकरा सब ठुकराबऽ ।।
धन्य छै आपनऽ देश के माँटी आरू गंगा-पानी ।
जेकरऽ सेवन से भागै छै, देहऽ के परेशानी ।।

कवि क' आपनऽ देश आरु स्वदेशी निष्ठ व्यवस्था पर गरव छै । कारण यहाँ कहीं भी बनावटीपन नञ्‍ छै । दोहरापन नञ्‍ छै ।

कवि 'हरेन्द्र' जी एक शिक्षक होवय के नाते आपनऽ शिक्षकोय संस्कार के सुरभि भी बिखेरै म कोय कोर-कसर नञ्‍ छोड़ै छऽथ । हिनकऽ रचना सें बड़का सें लेके छोटका, बच्चा—बुतरु तांय लाभ उठावै पार' ।

कवि 'हरेन्द्र' जी बिहारऽ महिमा के द्वारा बिहार के सम्बन्ध में बड़ी सहजता के साथ बच्चा-बुतरु क' जानकारी दं छऽथ। एकरा याद करै म' बच्चा सनी क कोइयो दिक्कत नञ्‍ । हिनकऽ कुच्छु पंक्ति क देखियै —

हमरऽ राज्य लगै बड़ी सुन्दर/महिमा अगम अपार ।
जेकरा बीचे—बीच बहै छै गंगा जी के धार ।।
दक्षिण दिशा छौन उड़ीसा स्थित उत्तर में नेपाल ।
पश्चिम में यू०पी० एम० पी० आरू पूरब में बंगाल ।।

कोडरमा केरऽ अबरख, ताम्बा घाट शिला बेजान।
मूरी में एलुमिनियम, झरिया में कोयला के खान ॥
जमशेदपुर के लोहा नामी, घर--घर छै परचार,
हमरऽ राज्य लागै बड़ी सुन्दर, महिमा अगम अपार।

गामऽ के खूबी, खूबे पेड़ लगावऽ किसान देश के जान, हमरऽ भारत देश महान, बच्चा पढ़ावऽ निरक्षरता भगावऽ, वाजिव बात

भ्रमण आदि कुल मिलाय जुलाय क' हिनकऽ हरेक रचना उत्तम शिक्षकीय संस्कारयुक्त आरु शिक्षाप्रद छ।

अब हिनकऽ कुच्छू सुधारवादी रचना क' भी देखलऽ जाय। कवि 'हरेन्द्र' जी एकरा द्वारा समाज में परिवर्त्तन-चाहैं छऽथ। कुच्छु बानगी देखिए—

वर्ग पाँच छै शिक्षक एक।
हे बिहार सरकार लगावऽ
शिक्षौं में कुछ बुद्धि-विवेक।
नामांकन त हम्में खूब करै छी,
बच्चा बोलाव' घर घर घूरै छी,
गाँव स बच्चा आवै छै ढेरी,
अकेल्ले सब क' राखै छी घेरी,
बकरा--बोतू हम्हीं गिनै छी
जनगणना में माथा धुनै छी
हमरा ऊपर बोझ अनेक
वर्ग पांच छय शिक्षक एक।
सबके हाजरी हरे बनाय छी,
सबके खातिर गेहू मगाय छी,

आफिसरें बोरा बिन तोलले देथों
मास्टरें नब्बे के क्विंटल लेथों
गामों मं शिक्षा समिति बनाय छो,
समिति क' माथ प' चढ़ले पाय छी।

विद्यालय कहियो महीना खांड़े, घूमलऽ फिरलऽ जाय छो,
गामों के लोग कुच्छु बोली छय हम्में त' गम खाय छो।
छोटका मोटका आफिसर सब क थोड़े जो लगाय छी,
बड़का बड़का के पारी ऐन्हों दै लै क' फड़ियाय छी।
साथो सगत सब्भें समझैंथों, पड़भ' तोंय फेरा मं
जहिया ऐभ' कोय ऊपरबाला अफिसरऽ के घेरा मं
देखलऽ जैतै विद्यालय मं रोजे सोंसे दिन कत्त सड़बऽ
उखड़ी में मूड़ी देने छी हम्म' चोटऽ सें कत्त डरबऽ।

उपर्युक्त तीनों कविता में कवि जे युगसत्य क' उगलकऽ छे ओकरा आय कोय नञ नकारें पार'। इ आय शिक्षा आरु शिक्षा जगत् के रीढ़ शिक्षक आरु अधिकारी के मनोदशा क' साफ-साफ चित्र खींचै छे। आय के शिक्षा के रखवारा शिक्षक आरु अधिकारी सनी के ऐसनऽ हालत रहतै त' शिक्षा के की दशा होतय। ऐकरा कोइयो समझें बुझें पार'। एकरा में आमूल सुधार चाहे छऽथ। उ शिक्षक, शिक्षा आरु शिक्षा अधिकारी सब्भे के दशा आरु दिशा में सुधार के कामना करै छऽथ ताकि देश के भविष्य सुरक्षित रहै पार'

एतनै नञ। नेता सनी क' भी खबर रखै छऽथ। नेता देश में विधान बनावै छै। युग दिशा लो निर्धारक के भूमिका निमाभै छै। मतर जब देशऽ क नेतें दिक् भ्रमित होय जैतै त' देश क' डूबना लिख छऽथ—

जोती क' जेथों घुरी नैऐथों,
पटन्हें, दिल्ली में दिवस गमैथो,
इठलैले चलथों टेढका चाल,
प्यादा सें फरजी वाला छौं हाल।

सब्भे नेता म' एकके बीमारी
आपन्है म' करथों मारामारी
पार्टिये रोज बदलथों खाली
हरदम खोजथों दूध के छाली ।
करथों की बें देश के सेवा
खोजै छों जौने माखन मेवा ।

कवि 'हरेन्द्र' जी के उपर्युक्त पंक्ति जे दुख—भरलऽ छै, जे लाचारी भरलऽ छै ओकरा कोइयो बुद्धिजीवी नञ्‌ नकारें पार'। आरु हुनका ली आपनऽ आय के नेता के स्वरूप अपरिचित नञ्‌ रहै पार'।

अयोग्य व्यक्ति क' नेता पद मिलना प्रजातंत्र के सबसें बड़ऽ दुःख छै। कर्त्तव्यहीनता आरु ओकरऽ भोगवती दृष्टि राष्ट्रीय अस्मिता, रक्षा, एकता आरू अखण्डता पर आय एक प्रश्नचिह्न छोड़ी देलकऽ छै।

कवि 'हरेन्द्र' जी के धारदार व्यंग्य दृष्टि नेता, दहेज शिक्षा, शिक्षक, छात्र एवं समाज सब्भे पर समान रूप सॅ पड़लऽ छै। कवि हिनकऽ दशा-दिशा सॅ, बिना कोय लाग लपेट के जन सामान्य क परिचित करावै के भरपूर चेष्टा करलकऽ छऽथ।

'उत्तंग हमरऽ अंग' कविता—संग्रह के शीर्षक छै। जेकरा माध्यम सें कवि अंगस्तुति प्रस्तुत करि क' अंग माहात्म्य सें जन-जन क' परिचित करावै छऽथ।

संग्रह के रचना में भाषा के सहज-सरल प्रयोग भाव प्रस्तुति-करण में चार चाँद लगनें छै। साथे साथ जग्घो-जग्घऽ पर निट्ठ देहाती शब्दऽ के प्रयोग रचना क बहुतें जानदार बनाय देलकऽ छै।

कुल मिलाय क' कवि 'हरेन्द्र' जी के इ इन्द्रधनुषी भाव धारा सें भरलऽ पूरऽ काव्य यात्रा आशंसनीय छै। हमरऽ हिनका ढेर सनी शुभकामना।

इन्दु भूषण मिश्र 'देवेन्दु'
महासचिव, भागलपुर प्रमण्डलीय
अखिल भारतीय भाषासाहित्य सम्मेलन

# सरस्वती वन्दना

सरस्वती मैया हे !
महिमा तोर अगम अपार ।

ब्राह्मी, वागीश्वरी, महाश्वेता वाणी,
वागीशा, विधात्री, शारदे वीणा-पाणि ।
नाम अनेक छौंन तोहार ।।

शुक्ल पक्ष पंचमी, माघऽ रंग महीना,
मैया के हाथ शोभै, पुस्तक आरु वीणा ।
काव्य, संगीतऽ के आगार ।।

नीर-क्षीर विवेकी हंस छेखौंन बाहन,
श्वेत कमल पे शोभे मैया तोरऽ आसन ।
श्वेत सच्चाई के आसार ।।

कालिदास, वाल्मीकि, तुलसी आरु कबीर'
पुराण-प्रणेता व्यास, भवभूति, भास, सूर,'
विज्ञजन पे तोरऽ आभार ।।

मुझ दुखिया के मैया ! लीहो अब खबरिया,
मनों म' अज्ञानऽ के भरल छय अन्हरिया ।
मेटिहो अज्ञानऽ के अन्हार ।।

★ 'अंग माधुरी' जनवरी-फरवरी ९९ अंक में प्रकाशित

# माय भगवती

हे माय भगवती हमरा
भक्ति के वरदान द' !
अनीति अन्याय आरू
आसुरी माया,
हेकरऽ मकड़ जाल देखि,
कल्पै छय काया ।
मोह-पाश काट वाला
शक्ति के वरदान द' ।

अस्त्र-शस्त्र धारी मैया,
सिंह के सवारी ।
सबक' त्राण देल्ह',
महिषासुर मारी ।
शरण पड़ल छी मैया,
हमरा ऊपर ध्यान द' ।

बायाँ सरस्वती शोभों,
लक्ष्मी तोरऽ दहिना ।
जगत के कल्याण करऽ
मिली तीनों बहिना ।
हरदम गुण-गान करों,
वोहिनें जुवान द' ।
हे माय भगवती हमरा भक्ति के वरदान द' ॥

# उत्तंग हमरऽ 'अंग'

हमरऽ अंग उत्तंग धरा पर,
अथर्व वेद म' हेकरऽ गान ।
ऐतरेय, गोपथ ब्राह्मण भी,
अंग-बंग सें नें अनजान ॥

चित्ररथ राजा अंग वंश के,
रोम पाद जे कहलावे ।
चम्प नाम ओकरे परपोता,
ई चम्पा नगर बसावे ॥

हावह' चम्पके खानदानऽ म'
जन्मे अधिरथ नामक सूत ।
जे पैलक गंगा म' पिटारी,
वोय म' सूतलऽ कर्ण- सपूत ॥

कर्ण करे सावा मन सोना,
आपनऽ हाथें रोजे दान ।
दानवीर हाव अंगराज के
करैछियें हम्म' गुण-गान ॥

शुभद्रांगी यही चम्पाके,
सम्राट अशोक के भाय ।
लखीन्दर केरऽ पत्नी बिहुला,
इन्द्रासन देलक हिलाय ॥

★

चम्पक श्रेष्ठी कथा कहै छय,
चम्पापुरी पुरानऽ नाम ।
महाँ करै छय बढ़िया बुनकर,
अभियो नित करघा के काम ।

बिक्रमशिला आचार्य पहिलकऽ
हमरऽ अंग भूमि के नूर ।
अतिश दीपंकर 'श्रीज्ञान' जी,
जे होलै जग में मशहूर ।।

गंगा बीच बटेश्वर शोभै,
शोभै श्री अजगैबी नाथ ।
लाखों यात्री साल्हैं आवी,
दर्शन करी टेकै माथ ।।

धनकुण्ड आरू बाबा विशु,
धन्नू महतो केरऽ थान ।
मंदार-मथानी केरऽ महिमा,
हाय त' गावै वेद-पुराण ।।

गोनू बाबा के महिमा कहो,
हमरऽ मनमां कहाँ अघाय ।
साँप कटलका शरण में आबी,
लौटी हँसी-खुशी सें जाय ।।

★

# बिहारऽ के महिमा

हमरऽ राज्य लागै बड़ी सुन्दर
महिमा अगम अपार।
जेकरा बीचे-बीच बहै छय,
गंगा जी के धार ॥

दक्षिण दिशा छौंत उड़ीसा स्थित,
उत्तर में नेपाल ।
पश्चिम में यू०पी०, एम०पी आरु
पूरब में बंगाल ॥

चारो तरफ सें घेरलऽ लागै
सौंसे राज्य बिहार ।
जेकरा बीचे-बीच बहै छय
गंगा जी के धार ॥

कोडरमा केरऽ अबरख, ताम्बा
घाटशिला के जान ।
मूरी में एलुमिनियम, झरिया
में कोयला के खान ॥

जमशेदपुर के लोहा-नामी
घर—घर छय परचार ।
जेकरा बीचे—बीच बहै छय
गंगा जी के धार ॥

[६]

घाघरा, बूढ़ी गंडक, कोशो,
फाल्गू, पुन—पुन, सोंन।
सब्भे नद्दी जीवन दैछौंन,
सब्भे दैछौंन धोंन ॥

सब्भै दैछौंन रंग--बिरंगी
फसल केरऽ उपहार ।
जेकरा बीचे--बीच बहै छय
गंगा जी के धार ॥

महावीर के पुण्य भूमि यहीं
गौतम के अवतार ।
मंडन मिश्र के प्रकाण्डता सें
परिचित सब संसार ॥

पिंजरे में सुग्गा—सुग्गी जहाँ
करै वेद उच्चार ।
जेकरा बीचे—बीच बहै छय
गंगा जी के धार ॥

सीता जनम बिहार में पैलक,
रघुपति पैलक ज्ञान।
धनुष यज्ञ मेला में जनकपुर
मुनि संग करै पयान ॥

धनुषा तोड़ो जानकी ब्याहै, करै लोग जयकार।
जेकरा बीचे-- बीच बहै छय गंगा जी के धार ॥

अंग माधुरी सितम्बर ९८ अंक में प्रकाशित

# गामऽ के खूबी

एक छोटऽ टा गीत हम गाय छी ।
आपनऽ गामऽ के खूबी सुनाय छी ।।
हमरा गामऽ के नाम छौंन कटहरा ।
बड़का टा गाँव आरु छौं बड़ा हरा-भरा ।
लेकिन बिजली ल' सब्भे ललाय छी ।। आपनऽ ····· ।'

पक्की सड़क हमरा गाँव के बीच-बीच ।
बच्चा में हाय स्कूल, पढ़ै सब ऊंच-नीच ।
पुस्तकालय सब मिली क' चलाय छी ।। आपनऽ ·····।।
यहाँ बसै नौआ, धोबी, ब्रह्मण, चमार छय ।

राजपूत, यादव आरु कुर्मी-कमार छय ।।
यहाँ हाड़ी, दुसाद सब पाय छी ।। आपनऽ ····· ।।
थोड़ऽ सा पंडित, तांती, दु तीन रंग के सावछय ।
यहां सब्भे जाति के बढ़लऽ खूब भाव छय ।।

हम्म' रहै मिली-जुली सब्भे भाय छी ।।आपनऽ ·····।।
मील आरु मेडिकल, भरलऽ दुकान छौंन ।
गामऽ म' मिलै सब जरूरत के सामान छौंन ।।
देव दर्शन देव लोकऽ म' पाय छी ।। आपनऽ····· ।।

इन्जीनीयर, डाक्टर, वकील अंचलाधिकारी,
एक्टर, डायरेक्टर व विद्या के पुजारी ।।
नाटक क्लबऽ म' धूम मचाय छी ।
आपनऽ गामऽ के खूबी सुनाय छी ।।

# किसान देश के जान

देश के जान भैया किसान ।
देहऽ म' जैसें बसै छय प्राण ।
तोरा बल पर बाबू भैया,
चलै छय सब्भे सीना तान ।।

देश केरऽ वक्ता, अधिवक्ता,
डाक्टर छौं चाहे अभियंता,
सरस्वती, लक्ष्मी के पुजारी,
आरो बड़का-बड़का नेता ।

सब्भे क' तोरऽ एक भरोसा ।
सबके आशा हरऽ के नाशा ।
महा भाग छऽ अन्न के दाता,
तइयो तोरा पास निराशा ।।

बगैर अन्न सब बीर-जवान,
कैसें राखतै देश के शान ।
संशय आरु निराशा त्यागऽ
तोरऽ काम छौं बड़ा महान ।।

देश तोरा ऊपर खुश हाल ।।
वरणा होतै हाल बेहाल ।
तोरा जागनें जागतै देश,
तोरऽ मेहनत के यह' कमाल ।।

अंग माधुरी मई ९९ अंक में प्रकाशित ।

# वर्ग पाँच छय शिक्षक एक

वर्ग पाँच छय शिक्षक एक।
हे बिहार सरकार लगाबऽ
शिक्षौ में कुछ बुद्धि-विवेक।
वर्ग पाँच छय शिक्षक एक॥

केना क' बढ़तै प्राथमिक शिक्षा
एक्खै कमरा म' पच—पच कक्षा
आपनों घर द्वार क' स्वर्ग बनाबऽ
मौका छौंन बढ़िया लाभ उठाबऽ
विद्यालय के छौंन जर्जर हाल।
तोरऽ शासन काल के यह' कमाल॥
नामांकन त' हम्म' खूब करै छी।
बच्चा बोलाब' घर—घरै घुरै छी॥
गाँव में बच्चा आबै छय ढेरी।
अकेल्ले सबक' राखै छी थेरी॥
तोरऽ व्यवस्था त' एहिनों तगड़ा,
बच्चा बैठैल' करै छय झगड़ा।
पढ़ैल' जगऽ नै पीयैल' पानी।
प्राथमिक स्कूलऽ के अजब कहानी॥

मिलथौ नै एक्को अभिलेख।
वर्ग पाँच छय शिक्षक एक॥

देखै छौंन सब्भै व्यवस्था तोरऽ
नैं सपरै छौंन त' गद्दीये छोड़ऽ

बिना मतलब वाला काम करै छऽ
शिक्षा म' सुधारऽ के दम्म भरै छऽ

ग्राम पंचायत हमरा प' बोझलह'
हमरा सतावै के युक्ति खोजलह'

आब' हम्मीं सब बच्चा कि पढ़ैबऽ
मुखिया के सेवा म' हरपल बितैबऽ

बिगड़ी जाय भ्ले गामों के बच्चा,
वह' करऽ तोरा लाघोंन जे अच्छा।

हम्हीं करै छी स्वास्थ्य परीक्षण।
चुनाव कराय के लै छी शिक्षण॥

बकरी बोतू हम्हीं गिनै छीं।
जन गणना म' माथा धुनै छी॥

हमरा ऊपर बोझ अनेक।
वर्ग पाँच छय शिक्षक एक॥

आंगीं प्रभा सितम्बर-दिसम्बर ९९
अंक में प्रकाशित।

---

शिक्षा छोड़ी दोसरऽ काम, माथा सें दूर भगाबऽ।
आपनऽ मुन्ना के भविष्य ल', जनता भी जोर लगाबऽ॥

---

# गेहूँ के वितरण झगड़ा के घऽर

गेहूँ के वितरण झगड़ा के घऽर।
कौनें गरियैतें लागं छय डऽर ।।

जे बकरी चरेंयों, पढ़' नैं जेंथों,
ओकरऽ गार्जन बोलैल' ऐथों !
मास्टरें की दै छय अपनां घरऽ सें।
मास्टरो चुप छौंन लाठी डरऽ सें ।।

सबके हजारी डरें बनाय छी।
सबके खातिर गेहूँ मंगाय छी।
औफिसरें बोरा बिन तौलले देथों।
मास्टरें नब्बे के क्विंटल लेथों ।।

गामों म' शिक्षा समिति बनाय छी।
समिति क' माथा प' चढ़ले पाय छी ।।
अफसर त' महिना--खांड़ें जैथौं।
समिति के लोगें रोजे धमकैथौं ।।

एक मुट्ठी गेहूँ कम नै दिहो।
गेहूँ के बदला पैसा नैं लिहो ।।
नैं त' तोंय घोटाला म' जैभेय।
फेरऽ म' पड़ी पीछू पचतैभेय ।।

हम्में बोला सभिस बचाय म'।
ग्रामीण लागलऽ धौंस जमाय म' ।।
हमरा त' पेटऽ में बहै छौंन हऽर।
गेहूँ के वितरण झगड़ा के घऽर ।।

# खूबे पेड़ लगाबऽ

पयविरण शुद्ध बनाबैल'
खूब पेड़ लगाबऽ भैया।
हाय जीवन सुफल बनाबैल'
खूब पेड़ लगाबऽ भैया॥
धरती पर ऊपज करावैल'
पेड़ वर्षा खूब करावै।
टहनी--डाली झूमी-झूमी,
बादल क' पास बोलावै॥
मिट्टी केरऽ कटाव क' रोकी,
भू क्षरण सें यहीं बचैथों।
पेड़-पौधा अगर नै होथों,
प्रदूषण त' धूम मचैथों॥
अगर नै होथों गाछ वृक्ष त'
धरती तबो क' होथों आग॥
बर्फ पिघलथों, पानी बनथों,
डूबथों भूमि के सब भाग।
धरती लेथों जल समाधि तब,
कैसे रहतै हेत' लोग।
हाय समस्या मिली-जुली,
छौ विचार करै के जोग॥
धार्मिक ग्रंथऽ म' पेड़ लगाना,
बड़ा पुण्य बतलाबै छय।
पेड़ काटना बड़ा पाप छय,
योहो टा समझाबै छय॥

बेटा रंग पेड़ें लोगऽ के
खूबे यश फैलावै छय ।
बेमतलब पेड़ काटै वाला,
नरक जाय पछतावै छय ॥
तुलसी, केला व पीपल, बेल,
इ पौधा पूजै के योग ।
हमरा सब माथा सें भागै,
एकरऽ सेवन सें दुख--रोग ॥
बापें—दादा पेड़ लगैलक,
जे फल हम्म' भोगै छी ।
यही साथें पूर्वज- पितरऽ के,
नामों हम्में जोगै छी ॥
अगला पीढ़ी लें हम्हूँ तोंय,
कुछ पेड़ लगाभो भैया ।
पेड़ लगाय के सब लोगऽ म'
सद्भाव जगाभो भैया ॥
बच्चा के जनम—जनौवा म'
या बीहा—शादी के दिन ।
पेड़ लगावै के हाय रोहतऽ
सबक' हौथों बड़ा पसीन ॥
ऐहिनों-- ऐहिनों मौका पर,
पेड़ लगायके ठान्हों बात ।
मौसम चाहे कोहिनों रहै,
जाड़ा कि गर्मी, बरसात ॥

नालन्दा दर्पण मार्च २००० में प्रकाशित ।

# हमरऽ भारत देश महान

जग में ज्ञान किरण छिटकाबै,
सगरे जेकरऽ मान—सम्मान।
सब्भैं जानैं, सब्भैं मानैं,
हमरऽ भारत देश महान॥

सिर पर मुकुट हिमायल शोभै,
नीचें जलधि पखार' पाँव।
हाय बीचऽ में अस्सी फिसदी,
बसलऽ झलकै खाली गाँव॥

गामों के देश सदा सें भारत,
बीचे गंगा घहराबैं।
तीन तरफ सें तीन समुन्दर,
एकरा घेरी लहराबै॥

ब्रह्मपुत्र, कृष्णा कावेरी,
जमुना, सिंधु, कोसी, सोंन॥
सरस्वती चाहें वागमती,
कम लागैं केकरा सें कोंन।

स्वर्ण रेखा क' के नैं जानैं,
जे कर' कहियो सोना दान॥
सब्भैं जानैं, सब्भैं मानैं,
हमरऽ भारत देश महान॥

दुनिया म' खोजो नैं मिलथौं
विविध भाषा सें भरलऽ देश
आबऽ घूमी हाय राज्य क' देखऽ
सब भाषी के अलगे भेष ।।

केरल, तामिलनाड, उड़ीसा,
मिजोरम, बिहार, बंगाल ।
हरियाना, पंजाब, मेघालय,
गोवा, कश्मीर, भोपाल ।।

उत्तर प्रदेश, आसाम, त्रिपुरा,
गुजरात, आंध्र, अरुणचल ।
महाराष्ट्र, कर्नाटक, सिक्किम,
छुटलहों मणिपुर, हिमाचल ।।

नागालैण्ड के बाद बचैछय,
खाली एक्के राज्यस्थान ।
सब्भैं जानै, सब्भैं मानै,
हमरऽ भारत देश महान।।

हमरऽ भारत भू पर झलकै,
कहीं जंगल, कहीं पहाड़ ।
कहीं बाघ, मृग, भालू, चिता,
ओयझैं सुनऽ सिंह दहाड़ ।।

देखैल' कन्हों-कन्हों मिलथौं,
करिया बंदर, उजला मोर ।
कौवा, मैना, बगुला, बगरो,
पपिहा कहीं मचाब' शोर ।।

हंस, कबूतर, चील बाज छय,
सुग्गा केरऽ टेढ़का लोल ।
आमी गाछी प' साल्हैं सुनभ'
कोयल के बोली, अनमोल ॥
रंग– विरंगा तितली, भौंरा,
फूल्हौ के भरलऽ मुस्कान।
सब्भैं जानैं, सब्भैं मानै,
हमरऽ भारत देश महान ॥
रामेश्वरम्, अयोध्या, काशी,
ऋषिकेश, बद्रीका धाम।
गुरुवायुर, मथुरा, वृन्दावन,
खूबे घूमऽ तीरथ तमाम ॥
कुमारी कन्या पार्वती छय,
पुरी सें घुरी—फिरी आबऽ
तिरुपति वाला बाला जी क'
नारियले फोड़ी चढ़ाबऽ
मधुसूदन, मंदार मथानी,
बैष्णो देवी, चण्डी माय।
सुलतानगंज म' अजगैबी,
बाबा बसलऽ देवघर जाय ॥
साहेबगंज के नजदीक म' छय,
रेवसी माय के थान ।
सब्भैं जानै सब्भैं मानै,
हमरऽ भारत देश महान ॥

सब्भे रंग के वेशो भाषा.

सब्भे रं देश के माँटी।
कहीं प' चिकनो, कहीं प' डोमट,
कन्हौं देखऽ बलकस खांटी॥
वसन्त, गर्मो आरु वर्षा,
शरद ऋतु जब आबै छौंन।
हेमन्त, शिशिर झाँको पीछू,
मन्ने—मन लजाबै छौंन॥
धर्म निरपेक्ष हमारा देशऽ म',
सब धर्म के रहै छय लोग।
सबके सब एक दोसरा क'
करैं छय खूबे सहयोग॥
होलीं कोय मनाबै इस्टर,
सोहराय कोय रमजान।
सब्भैं जानै, सब्भैं मानै,
हमरऽ भारत देश महान॥
सभ्यता—संस्कृत के सूरज,
पहिनें उगलै हमरऽ देश।
हमरा देशें फैलैनें छय,
विश्व—बंधुता के संदेश॥
राम-कृष्ण के हाय धरतीं पर,
गौतम, गाँधी के अवतार।
मंडन मिश्र के सुग्गा-- सुग्गी,
हरदम करैं वेद उच्चार॥

पुराण अठारह वेद व्यास के
सब्भे क' खूबे भावै ।
वेद, शास्त्र, रामायण, गीता,
हाय धर्म ग्रंथ कहावै ॥
महाभारत के कथा-कहानी,
सें कोय थोड़े अनजान ।
सब्भे जानै, सब्भे मानै,
हमरऽ भारत देश महान ॥
कलकत्ता, मद्रास, बम्बई,
दिल्ली चारो महा नगर ।
सबके खूबी अलगे—अलगे,
तोंय देखऽ ध्यानऽ सें अगर ॥
बम्बय बहार, दिल्ली मिनार,
कलकत्ता मैया काली ।
मद्रास केरऽ स्नेक पार्क छौं,
साँपें सें भरलऽ खाली ॥
बम्बई के अभिनेता बढ़िया,
मद्रास के माइला पोर ।
दिल्ली संसद भवन अनूठा,
बिदेशऽ म' छय शोर ॥
मेट्रो ट्रेन दूमहला मोटर,
हाय कलकत्ता के शान ।
सब्भें जानै, सब्भें मानै,
हमरऽ भार दे महान ॥

# ऐलै वसन्त

गोटा फुललै, तोसी फुललै,
फुलैलै मटरऽ के फूल ।
भेलै जाड़ऽ के अन्त, ऐलै वसन्त
सबके मन करै कबूल ॥

महुआ के डारी कोयल कारी,
मचाब' लगलै शोर ।
फूलऽ के मुख चुमी तितली भागै
लागै बड़ी मन जोर ॥

आमों के मंजर रस टपकाबै,
बढ़िया गंध सुहाबै ।
भौंरा के गुन-गुन, बड़ी मधुर धुन,
मन सबके उमगाबै ॥

पहिरलक धरती हरीहर साड़ी,
नीला रंग किनारी ।
बीच-बीच कहीं रंग पियरका,
चमकै क्यारी-- क्यारी ॥

सबभे जड़-चेतन मस्त दीखै छै,
ऋतुराज के ऐला सें ।
जैसें दुखिया धन, अंधा लाठी,
बाँझ पुत्र क' पैला सें ॥

# भौंरा

भौंरा केरऽ प्यार अनोखा,
ढेरों कवि गण गैनें छय।
प्रेम-पहेली अलि कुल जानै,
हमरा सब समझैनें छय॥

फूलऽ केरऽ प्रेमी भौंरा,
हरदय फूल प' आबै छय।
गड़' भले देहऽ म' कांटा,
तनिको नैं घबड़ाबै छय॥

आँधी आब' या तूफान,
पड़' चाहे संकट म' प्राण।
मिलथैं पाबै छय फूलऽ सें,
भौंरा जीवन म' परित्राण॥

हाय प्रेमऽ म' छिपलऽ स्वारथ,
इ ठो गीत कोय गाबै छऽ।
मुरझैलऽ फूलऽ पर बैठलऽ
केतना भौंरा पाबै छऽ॥

सब फूलऽ पर झूट्ठे किरिया
सब भौंरा नें खैनें छय।
मानव, कीट, पतंगा तक
कोय नें साथ निभैनें छय॥

कली खिली, बनै जब फूल,
लगल्हों भौंरा मँड़राब' ।
उड़ी चल' त' मुड़ी नै ताक'
लागै फूल जों मुरझाब' ॥

फूलऽ पर बैठी भौंरा क'
के देखै छऽ गीत सुनैतै ।
मुरझैलऽ फूलऽ पर बैठीं,
के देखै छऽ प्यार जतैतें ॥

धर्म ग्रंथ बतलावै छय,
सुर, नर, मुनि तक केरऽ रीति ।
बिना स्वारथ के प्रेम कहाँ,
स्वारथ ताकी सबके प्रीति ॥

---

अचरज करभो सुनी—सुनीं सब
एक बात अलबत्ता ।
होरलिक्स स' बढ़लऽ घर—घर के,
सत्तू म' गुणवत्ता ॥

रोज थोड़ो सा दूध मिल' त',
सब्टा टौनिक बेकार ।
खाली गरम पानी पीला स',
केतना रोग फरार ॥

---

# भ्रमण

दक्षिण भारत चप्पा—चप्पा,
घूमी—फीरी ऐलाँ ।
साथीं—संगत के संग मिली,
खूबे मौज मनैलाँ ॥

बिहार, बंगाल समुचे टप्पी,
उड़ीसा म' पग धैलाँ ।
आन्ध्रा, तामिलनाडू होतें
आगू केरल गेलाँ ॥

त्रिचूर, त्रिवेद्रम्, एरना कूलम्
घूमी मन हर्षैलाँ ।
पूर्ण साक्षर केरल नगरी म',
दू—तीन दिन गमैलाँ ॥

नारियल तेल म' बनलऽ सब्जी,
हाय सब्भे ठाँ पैलाँ ।
चावल वाला इडली, डोसा,
बड़ी चाव सें खैलां ॥

कुमारि कन्या सागर---संगम
म' जाय खूब नहैलाँ ।
बिवेकानंद समाधि ऊपर,
हमहूँ ध्यान लगैलाँ ॥

सुचिन्द्रम् में बाबा भोले क'
एक—दू फूल चढ़ैलां ।
वाला जी के दर्शन म' हम्हूं,
काफी कष्ट उठैलां ।।

गुरुवायुर, पुरी, रामेश्वरम्
सबठां शीश नवैलां ।
कलकत्ता के काली माय क'
खूबे विनय सुनैलां ।।

गीत-गजल गाड़ी पर गाबी,
हँसलां खूब हँसैलां ।
सब्भें पूरा यात्रा मस्ती
के माहौल बनैलां ।।

'चेतना' काव्य संकलन में प्रकाशित

---

यात्रा बड़ा सुहाना लागै,
कहियो करलऽ जाय ।
केतनो देश—बिदेश म' घूमऽ
थोड़े मऽन अघाय ।।

प्रत्यक्ष ज्ञान सुनलऽ देखी क'
दिल—दिमाग म' होय ।
यात्रा के आनन्द क' हरदम,
स्वीकार' सब कोय ।।

---

# बाबा अजगैबी

अजगबी बाब के महिमा,
अनुपम, अद्‌भुत, महान छय।
सब धर्म ग्रंथ के पन्ना पर,
अंकित इनकऽ गुण-गान छय॥
धन्य-धन्य सुलतानगंज छय,
जहां बहै पावन गंगा।
जेकरऽ पावन जल सेवन सें,
कष्ट मिटै रोगी चंगा॥
ऊ पावन गंगा बीच बसलऽ
बाबा सब्भे के शान छय।
सब धर्म ग्रंथ के पन्ना पर,
अंकित इनकऽ गुन-गान छय॥
उत्तर वाहिनी गंगा के जल,
बाबा भोले मन भावे।
अर्पण करी हाय पावन जल,
मन वांछित फल सब पावै॥
बड़ा पुण्य अजगैबी दर्शन,
ओहिनें गंगा स्नान छय।
सब धर्म के पन्ना पर,
अंकित इनकऽ गुण-गान छय।
सावन भरी सुलतानगंज म'
देश-विदेश के भरलऽ लोग।
स्वर्ग धरा पर उतरी आवै,
पाव' सब्भें सब सुख भोग॥
जय-जय हो बाबा अजगैबी!
भक्ति खाली अरमान छय।
सब धर्म ग्रंथ के पन्ना पर,
अंकित इनकऽ गुण-गान छय॥

# बच्चा पढ़ाबऽ निरक्षरता भगाबऽ

पढ़ैल' भइया भेजऽ आपनऽ ललनमा ।
जेकरऽ कि घरबा म' कोनों नैं काम छौंन,
तइयो स्कूली म' कहिनें न' नाम छौंन ।
गुल्ली-डण्टा खेलि-खेलि बितावै छौंन दिनमा ।
पढ़ैल' भइया भेजऽ आपनऽ ललनमा ।।
पढ़ि-लिखी, ज्ञान सीखी, होथों होशियार हो ।
बदली जेथों चाल-चलन, बुद्धि—बिचार हो
गामों आरु समाजो म' पथों सम्मनमा ।
पढ़ैल' भइया भेजऽ आपनऽ ललनमा ।।
टेगोर, सुभाष चन्द्र, तिलक, गांधी महतमा,
गौतम, महावीर, रंग बनथौंन धरमतमा ।
पढ़लहै- लिखलहै सें होथों सफल किसनमा ।
पढ़ैल' भइया भेजऽ आपनऽ ललनमा ।
पढ़ि—लिखी देश सेवा करथों भरपूर हो ।
देश में निरक्षरता होय जैतैं दूर हो ।।
बचि जैथों दै सें आरु अंगूठा निशनमा ।
पढ़ैल' भइया भेजऽ आपनऽ ललनमा ।।

* 'अंग माधुरो' सितम्बर ९७ अंक म' प्रकाशित

# साक्षरता गीत

हे रे नू नू ! पढ़बे त' ज्ञान होतौ तोरा ।
ज्ञान होतौ तोरा, सम्मान मिलतौ तोरा ।।
गाय चरैहें भैंस चरैहें आरू चरैहें बकरी ।
कागज चुनीहें, घोंघा चुनोहें चाहे चुनीहें लकड़ी ।।
वही साथ पढ़बें कुछछु काम देतौ तोरा ।। हे रे ··· ··· ।।
क, ख, ग, घ, ङ पढ़बे च, छ पढ़बे जखनी,
खुश होतौ बाप—माय, मिठाय देतौ तखनी ।
पढ़ै के आनन्दऽ के भान होतौ तोरा ।। हे रे ··· ··· ।।

# आपरेशन विजय

विजय आपरेशन भेलै जारी,
भगइबै सबक' मारी--मारी ।

मशकोह, द्रास, कारगिल, बटालीक भेलै खाली ।
पाकिस्तानी संकट म' पड़लै अपनां चाली ।।
वरणा हम्म' शांति के पुजारी ।भगइबै ·· ··· ।

अटल विहारी जनता बीच करनै एलान छय ।
तैय्यार जान देल' सब्भे हिन्दू-मुसलमान छय ।।
सबक' आपनऽ धरती छय प्यारी । भगइबै ··· ··· ।

भारी बदतमीज लागै सब्भेटा घुपपैठी ।
तोड़ी देबै मारी-- मारी सब्भै केऽ ऐठी ।।
मिटाय देबै सबके खुमारी । भगइबै ··· ··· ।

पाकिस्तानी क' सबक अबरी अहिनों सिखइबै,
खोजी—खोजी सबक' आपनों सीमा सें भगइबै ।
असुर खत्तिर बनबै असुरारि । भगइबै ··· ··· ।

---

★ दुश्मन के छक्का देबै छोड़ाय,
जे सीमा पर ऐतै ।
रगड़तै नाक आरु घुनतै माथऽ
करनी पर पछतैतै ।।

---

# मट्टा पीबै फूकी-फूकी

ठोकर खैल्हे सें सम्हरें छय,
चलें छय इन्सां झूकी झूकी।
गरम दूध सें मुँह जलाय कं,
मट्ठा पीबें फूकी–फूकी ॥

कलिंग युद्ध के नर संहारें,
अशोकौ के दिल दहलैलकै।
विजय लालसा सें हुनी पहिनें,
मार-काट तं खूब मचैलकं॥

सब्भे करीये कं सीखें छय,
हम्हीं कहिनें जैब चूकी ।
गरम दूध सें मुँह जलाय कं
मट्ठा पीबें फूकी—फूकी ॥

दहेज दानव देबें दफनाय,
मन मं सब्भें हाय ठानें छय।
बेटी घरियां सब्भे बोल मं,
बेटा घरियां के मानें छय॥

जे लं लै छय वोहो बोलें छय,
केना देखबै पेटऽ मं ढूकी।
गरम दूध सें मुँह जलाय कं,
मट्ठा पीबें फूकी—फूकी ॥

बाप--दादा केरऽ अरजलका,
मौज—मस्ती म' खूब लुटैबे।
अछैतें चीजें के मार्ने छय,
जे हम्हीं तकलीफ उठैबे॥
नें रहला पर देखलऽ जैतै,
सत्तू सानबै थूकी—थूकी।
गरम दूध सें मुँह जलाय क'
मट्ठा पीवै फूकी—फूकी॥
पाकिस्तानी उत्पाती नें,
जेना हमरा तंग करलकै।
हमरो बीर--जवानें सभैं,
ओन्हैं ओकरा संग करलकै॥
दुष्टऽ क' सबक सिखाना जब छय,
कहिनें, केना, जैबै रुकी।
गरम दूध सें मुँह जलाय क'
मट्ठा पीब फूकी — फूकी॥
★ 'अंग माधुरी' सितम्बर ६६ अंक में प्रकाशित

---

★ थम्स अप, कोका कोला सबक'
पहुँचाबै नुकसान।
अनजान बनी कहिनें डालै छऽ,
लोंय संकट म' प्राण॥

# उखड़ी म' मूड़ी

आय सत्य-अहिंसा, धरम छोड़ि क', मिथ्या क' अपनैलां।
बड़का—बड़का के लोक लाज हम, सब्भे टा बिसरैलां॥
बिन मतलब वाला झूठ बात म' झूट्ठे कसमों खैलां।
झगड़ा—झंझट आरु निन्दा म', बेशी समय गमैलां॥

सब्भैं करनी के फल भोगै छय, हम्हूँ त' जानै छी।
केकरो कहलऽ कहियो नै राखों, हट अहिनें ठानै छी॥
पछतैला सें कुछ लाभ छय थोड़े जहिनों करलां भरबऽ
उखड़ी म' मूड़ी देनें छों हम्म' चोटऽ सें कत्त' डरबऽ

मारीच खूब समझाबै, रावण भेलऽ आग बबूला।
बुद्धिमान बनै छय एखनै लाती फाँक' क' लागभ' घूला॥
हाय कहै छिहों जे बात अहीं म' छौंन तोरऽ कल्याण।
उल्टा—पुलटा जों पाठ पढ़ैभो, ऐन्नैं जैथों प्राण॥

बत्तर वाला मार जों मारीच, कर' याद घबड़ाय।
रावण के हाथें प्राण गँवाना, अनुचित यहो लखाय॥
सुनिश्चित आजे मरण चलों तब राम बाण सें मरबऽ
उखड़ी म' मूड़ी देनें छी हम्म' चोटऽ सें कत्त' डरबऽ

कहै मन्दोदरी दसकंधर सँ हठ नैं स्वामी ठानऽ
श्री राम चन्द्र परमेश्वर छेकै, तोंय इ बात क' मानऽ
खरदूषण आरू कुम्भकर्ण सब, क्षण म' गेलै जानऽ
तोंय जानी—बूझी क' प्राण नाथ! कूइयों अब नै खान्हऽ

मन्दोदरी एकदम अज्ञानी छऽ, बोलै तब लंकेश।
हाय रंग दूत के बनवासी क', जे दै छौं संदेश॥
भगवान छेकै त' बड़ी बढ़िया, ओकरे हाथें तरबऽ
उखड़ी म' मूड़ी देनें छी हम्म' चोटऽ सें कत' डरबऽ

हड़ताल करै छी, खूब लड़ै छी, सभे सरकारऽ सें।
वाजीब मांगे म' कत्त' केनां डरतै तकरारऽ सें॥
ससपेण्ड छोड़ि डिसचार्ज के धमकी सुनै छीं कत्त' भाय।
अहिनों गीदड़भौंकी सें जेबै थोड़े सब घबड़ाय॥
मांग पर डटबै, जरा नैं हटबै जे करतै सरकारें।
जे वादा खिलाफी उ की बोलतै, भला लाज के मारें॥
सरकार क' जे करना छय करत, हमरा जे छय करब ऽ
उखड़ी म' मूड़ी देनें छी हम्म' चोटऽ सें कत्त' डरबः

आय पढ़ै–लिखै के युग जमाना, आबी गेलै भारी।
परीक्षार्थी सब परीक्षा खातिर, कर' खूब तैयारी॥
खर्चा-बर्चा म हमरऽ गार्जन, कऽर कसर नैं करलक।
तइयो सब कोय पढ़ै म' लागै, हम्म' जोगौं खेसाड़ी॥
ओयझैं ताम के अड्डा जमकै, जों कोय देखैं लोगें,
कहलक तोरा पढ़ना छौ थोड़े, यह' खेसाड़ी जोगें।
सबकोय करतै पासे देखबै, फेल त' हम्हूँ करबः
उखड़ी म' मूड़ी देनें छी हम्म' चोटऽ सें कत्त' डरबः

विद्यालय कहियो महीना-खाड़ैं घूमलऽ फिरलः जाय छी।
गामों के लोग कुछ्छु बोलै छय हम्म' त' गम खाय छी॥
छोटका,मोटका ओफिसर सबकै, थोड़े जी लगाय छी।
बड़का-बड़का के पारीं ऐल्हों, दै ल' क' फड़ियाय छी॥
साथी-संगत सभैं समझैयो, पड़भ' तोंय फेरा म'॥
जहिया एभ' कोय ऊपर वाला, ओफिसरऽ के घेरा म॥
देखलऽ जेतै विद्यालय म' रोजे, सोंमे दिन कत्त' सड़बऽ
उखड़ी म' मूड़ी देनें छी हम्म' चोटऽ सें कत्त' डरबः

भागले सब अंग्रेज, अंग्रेजियत हमरऽ कहाँ छय गेलऽ
सामान विदेशी, बढ़िया बेशी, लाग' हमरा लेलऽ
कोलगेट मंजन, साबुन ललका, पीयऽ कोका कोला।
घड़ियो, रेडियो, टी०भी० विदेशी, लागै छय अलबेला॥

ऐकरा बिनु शान-गुमान की रहतै, देखऽ जरा बिचारी।
लोगें कहथौं, गुलामीये ऐथौं, ओकरे इ तैय्यारी॥
कहै छऽ ठीकके देखलौं आजादी, गुलामी देखी मरबऽ
उखड़ी म' मूड़ी देनें छी हम्म' चोटऽ सें कत्त' डरबऽ

चुनाव के मौसम ऐलहों जहिया, घूमऽ गांव-मुहल्ला।
हमरा सभैं क' देखी मचैंथों, जमता खूबे हल्ला॥
कोय कहैथौं हाय मब छो लुच्चा, जींती क' जब जैतौ,
देहाती जनता के खोज-खबर लेल' भला इ ऐतौ॥

कोय कुछ मांगैं, कोय गरियाबै, कोय पिलैथौं चाय।
मब पाटी वाला अगुआ—पिछुआ, देथौं खूब दोहाय॥
चलऽ जीती क' जैभौं, सभे देभौं, बाबा करी टुघराबऽ
उखड़ी म' मूड़ी देनें छी हम्म' चोटऽ सें कत्त' डरबऽ

छट्ठी रात लिखलक जे विधाता, हाव के मेटनहार।
केतनों नाक रगड़तै कोइये, होतै जे होनहार।
सच्चा हाय ठो दुनिया 'म' जब छ, हाय—हाय बेकार।
बिना कर्मेले भेटथोंन सब जों, लिखलऽ होतै लिलार॥

समझाबै लोगें अन्नों खातिर, पेटो भूखें जरतो।
हाथऽ पर हाथ राखी क' बठबे, पेट कहां स भरतो॥
जेकरा जे बोलना छौंन बोलऽ, केकरऽ रस्ता धरबऽ।
उखड़ी म मूड़ी देनें छी हम्म चोटऽ सें कत्त डरबऽ॥

# वोट

वोट गिरायल गेलां जखनी,
दू-चार हीरो ऐलऽ तखना।
कहलक तोरऽ गिरल्हों वोट,
सुनी क' हमरा बड़ी कचोट।।

देखलौं ठाढ़ऽ बन्दूक धारी।
वें की देतै सब्भैं क' मारी।।
यही खेतऽ के वोहो मूली,
रहै छय सबस' मीली-जूली।।

हाय प्रजातंत्र ऐलै कोन
करैं छय वह' जेकरऽ जे मौंन।
वोटो केरऽ अब नैं अधिकार,
कहिनों होतै हाय सरकार।।

हाइह' छेलै बापू के ख्वाब!
लूट-पाट करी बनें नवाब।
अखनी कटतियै उनको नाक।
भल्हैं मुनलकें तहियै आंख।।

आबी गेलै यहूँ घोटाल।
जपं कर्मचारी सब माला।।
काम छोड़ीं क' वोट गिरायल'
फेनू' ऐबं की देनऽ खायल'।

★ ★

★

# चुनावी माहौल

माहौल चुनावी जहिया ऐथों,
उम्मेदवार सब द्वारी प' जैथों।
जोड़थौं सब्भे के आगू हाथ।
चाहे तोंय मारऽ ओकरा लात॥

हँसी क' देथौं अहिनों टारी,
दुधारु गाय के जेना लताड़ी।
बड़ी मीट्ठऽ लागथौं तोरऽ बोली।
केतनों मारभ' बात के गोली॥

हँसी क' बोलथौं दुर्जन नाँकी।
कहीं न' कहना जेतना छौं बांकी॥
कोय कहै लुच्चा, कोय बेइमान,
ऐकरा जिम्मा छौं झूट्ठऽ के खान।

जीती क' जैथौं, घुरी नैं ऐथौं,
पटन्हैं दिल्ली म' दिवस गमैथौं।
इठलैथौं चलथौं टेढ़का चाल।
प्यादा सें फरजी वाला छौं हाल॥

सब्भै नेता म' एक्के बीमारी,
आपन्हैं म' करथौं मारा-मारी।
पाटीये रोज बदलथौं खालो,
हरदम खोजथौं दूध के छाली॥

जेकरा घर नैं मिलै खेसाड़ी,
हाव पागल छौं पीबी क' ताड़ी।
करथौं की वें देश के सेवा,
खोजै छौं जौनें माखन-मेवा॥

महिमा एकरऽ बड़ी अगम-अपार।
बनी जाय कहीं एकरऽ सरकार॥
फूली क' होथौं आखारी बेंग।
फेह को धरथौं धरती पर टेंग॥

एकरऽ घर भरथौं हीरा-मोती।
हमरऽ के देखतै फटलका धोती॥
आपनऽ घर-आंगन स्वर्ग बनैतऽ
बीबी-बच्चा संग मौज मनैतऽ

कथौल' ऐतऽ देहात इलाका।
छोड़ी पटना, भागलपुर, बांका।
फेरु हाय दर्शन तहिया होथौं,
माहौल चुनावी जहिया ऐथौं॥

★ 'बगुला' अंक(२) १९९९ में प्रकाशित

## होनी

होनी त' होइये क' रहथौंन, हाय सच त' मानै छी।
करनी करी लिखलका मेटै, हाइहो त' जानै छी॥
सावित्री—सत्यवान आरु सती बिहुला के बात,
पति दान केना क' पैलकै, सुनथैं छियै दिन—रात।
तइयो द्वारी बैठो—बैठो, पूरा समय गँवाना,
अहिनें आदमी क' होथैं छय, मुश्किल पेट चलाना॥
भाग्य भरोसें बनी निकम्मा, काम—काज मटियैतै,
ओकरऽ संकट बढ़ले जैतै, कहियो नैं सुख पैतै।
होना जे छय होबे करतै, मेहनते हमरऽ काम।
मेहनत के फल मीठ्ठऽ होय छय, जेनां पकलका आम॥

★ 'नालन्दा दर्पण' अगस्त २००० में प्रकाशित

★★
★

# साँपऽ छुछुनरी वाला छऽ हाल

हमरा घरें ब्याहैल' बेटी ।
राखलौं किनी बक्सा-पेटी ।।
जेकरा घरें बेटा जवान,
ओकरऽ देखभो अलगे शान ।

खोजौं सौंसे जाय इलाका ।
सब्भैं मांगे पूरे टाका ।।
बीस हजार बीघा छौं डाक ।
तभीये बजथौं तुतरु ढाक ।।

चपरासी के मांग छौं लाख ।
ओकरा सें आगू जैभ' खाक ।।
मांग साइकिल, रेडियो, टी-भी ।
नोटऽ ल' थैला राखलऽ सीबी ।

कहाँ सें लानबऽ हेत्त' सामान
घुरी-फिरी बैठै छी झमान ।।
करौं दम नैं, छोड़तें मलाल ।
सांपऽ छुछुनरी वाला छऽ हाल ।।

अगुआ के तोंय बात नैं बोलऽ
उनका आगू बात जों खोलऽ
भरी धो उनकऽ पहिनैं थैला ।
नापी ओन दस-पांच पैला ।।

रुपया-पैसा कुछ घरऽ म' दहो ।
बाल जे कहथों सब्भे सहो ।।
तब' वें कोय जूत लगैथौं ।
झूठ-सांच सब बात बनैथौं ।।

जों कहीं उनकऽ बात नैं मानऽ
आपनऽ जीह् जहां कोय ठानऽ
बैठलऽ बात देथौं उखाड़ी।
बनलऽ काम क' देथौं बिगाड़ी ॥

करै म' बनथौंन नैं छोड़ै म',
बड़ी मुश्किल रिस्ता जोड़ै म'।
येन्हैं बीतलऽ केतना साल।
सांपऽ छुछुनरी वाला छऽ हाल।

दहेज--दानव मुँह छै बैनें।
वें मानतै बिना कुछ खैनें ॥
शिक्षा जेतना आगू बढ़लै,
ओतनें ऊपर मांगो चढ़लै ॥

सोचलां बेटी क' दौं पढ़ाय।
स्कूली म' देलां नामों लिखाय।।
ध्यान धरी पढ़ेलां - लिखैलां।
बड़ो जतन स' काबिल बनैलां ॥

पढ़ली बेटी ल' पढ़लऽ जमाय,
जों नैं करै छी होतऽ हँसाय।
बढ़लका खोजै म' भटकै छी ॥
मांग—चांग सुनी दृटकै छी।

मुरूख रहतो, मूर्खो स' करतां।
कथील' हेत्त' खोजैं म' मरतां।
झुट्ठे पढ़ाय म' भेलां पैमाल।
सांपऽ छुछुनरी वाला छऽ हाल ॥

★★
★

# वाजीव बात

वाजीव बात खिलेथों लात,
जों ऊ बात छीन तीक्ख ।
बढ़िया बोलीं मिश्री घोली,
बोलैल' सब कोय सिक्ख ।।
वाजीव बात बापऽ क' कहबै, हाय एकदम बेकार ।
वाजीव बोलै वाला देखऽ करथैं रहथौं तकरार ।।

दू ठो लड़का, वोय म' वड़का, पनभरनी लेगां जाय,
बोललै प्मासें कण्ठ सुखै छऽ, मैया द' पानी पिलाय ।
बड़ा प्रेम सें ऊ पनभरनी,
ओकरा पानी पिलाब' ।
छोटखौं टेबी बढ़िया मौका,
झट बढ़िये गीत सुनाब' ।।
हे-हे हमरा बापऽ के बहू ! हमरहौ पानी पिलाबऽ
हाथ जोड़ी क' अर्ज करै छी, हमरहौ प' दया देखाबऽ

सुनथैं आग बबूला भेली, हाव ह' पन भरनी माय ।
बाल्टी—बाल्टी मारी—मारी, देलकै प्यास बुझाय ।।
सुनला म' जे अच्छा नैं लाग
हाव ठो सच क' ठुकराबऽ
वाजीव जों उस्सठ लाघों त'
ओकरहो दूर भगाबऽ ।।

# जों तोंय चाहऽ

जों तोंय चाहऽ बिना इलाजें,
सबटा रोग भगाब',
जों तोंय चाहऽ बिना कमैनें
धन-संपत घर आब',
बिन काबिल, बिन घूस जों चाहऽ
नौकरी तोंय पाब',
रूसलऽ प्रेमी के संग चाहऽ
जों यदि रास रचाब',
अगर तोंय चाहऽ छूमंतर म'
जीत' केश मुकदमा
अगर चाहै छऽ घड़ी-घण्टा म'
मेटाब' सब सदमा
भाग्य भरोसें बनी निकम्मा,
बैठी ध्यान लगाबऽ
जंतर- मंतर, जादू—टोना,
सब्भे तोंय अपनाबऽ
तांत्रिक लग तोंय जाय क' रगड़ऽ
आपनऽ-आपनऽ नाक।
ग्रह काटी सब काम बनैथों,
खुलथोंन तोरऽ आंख'।

# बुड़बक के धऽन

नौकरी म' घूस दू लाख देलौं।
बिहार पुलिस के नौकरी पैलौं।।
बेंच आरू वर्दो पहिनें देलकऽ
कागज पर योगदान कर बैंलकऽ
वेतन आरु भत्ता मिल' लागलऽ
बेरोजगारो माथा सें भागलऽ
ठाम्हैं आबी गेल्हों करैल' चेक।
खूब खिलैलिहों आमलेट-केक।।

खाय-खाय खूब बड़ाय करलखौं।
जाय क ऑफिस कागज भेजैलखौं।।
कागज म' लिखलखौं हमरऽ छटनी।
बुड़बक के धऽन होशियारऽ के चटनी।।
एक दिन दू ठो बिलैया मोटी,
कहूँ सें पैलकी तीन ठो रोटी।
बांटै घरी करें मारा—मारो।
एक बंदर देखै खूब निहारी।।

तरजुआ लेन्है ऐलै बंदर।
भरलऽ घात रहै जेकरा अंदर।।
आधा-आधी बांटै म' खैलकै।
झगड़ा के फऽल बिलैया पैलकै।
बोललै दोनों अब नैं बटबैबऽ
बचलाका आपन्है बांटी खैबऽ
बंदर बोलो हाय हमरऽ खटनी।
बुड़बक के धऽन होशियारऽ के चटनी

# बेरोजगारी मिटइबै

स्वदेशी केरऽ करी परचार हो,
बेरोजगारी मिटइबै ।
हमरऽ सबके दुश्मन विदेशी कम्पनियाँ ।
रोजी रोजगार धिनी दै छय गर्दनियाँ ॥
करबै हम ओकरऽ बहिष्कार हो
बेरोजगारी मिटइबै ।
वें चौपट करै छय पुस्तैनी सब धन्धा ।
विदेशी कम्पनियाँ डालै एहिनों फन्दा ॥
कहाँ मिलै कोनों रीजगार हो,
बेरोजगारी मिटइबै ॥
जूता, चप्पल गाँव के बनलाका पहनबै ।
टौनिक के बदला दहीं, दूध खैइबै ॥
तब गामों के होतै उद्धार हो,
बेरोजगारी मिटइबै ।
बूटऽ के सत्तू अरु बेशन बनइबै ।
हम साबुन बनाइक घर-घर म चलाइबै ।
बनइबै हम पापड़-अचार हो,
बेरोजगारी मिटइबै ॥
गोबर वाला खादऽ सें फसल उगइबै ।
बनाबैल खाद सब किसान्हों क जेगइबै ।
करऽ सपना स्वदेशी साकार हो,
बेरोजगारी मिटइबै ॥

★ 'अंग माधुरी' दिसम्बर ९९ अंक में प्रकाशित ।

# स्वदेशी सपना

ऐलऽ छेलै विदेशी भारत,
पहिनें कर' व्यापार।
बैठैं केरऽ जब मिललै जगधऽ
देलकै टाँग पसार॥

देखनें—देखतें शासन सत्ता,
लेलकऽ आपनऽ हाथ।
फेरु जे सबके दशा पुरैलक,
कहै के नैं छौं बात॥

ओकरऽ सत्ता उखाड़ै म' त'
बापू जी परेशान।
केतना जान गमैलक हमरऽ
देश के वीर–जवान॥

जे पैलक दुश्मन के संज्ञा,
ओकरऽ बात न्यारी।
हाय देखै छी दुश्मन रहलऽ
फेरु टाँग पसारी॥

जगथैं हम्में सब खोजै छी,
कोलगेट टुथ पेस्ट।
चाय विदेशी सबसें पहिनें,
जेन्हैं ऐलहौं गेस्ट॥

लिप्टन टाइगर, गुडरिक, टाप,
ताजमहल छौं नाम ।
वोय साथें ब्रिटेनिया बिस्किट
बिना की चलथों काम ।।

रेडियो, टी० भी०, घड़ी विदेशी,
हाय सब हमरऽ शान ।
पेप्सी, कोका कोला पीबीं,
भारत देश महान ।।

चढ़लऽ जाय छौं रंग विदेशी
हमरा ऊपर आय ।
विदेशी एक दिन रंग जमैथौं,
मान्हो सच्चा भाय ।।

आबो गेलै कम्पनी विदेशी,
दोनों भुजा पसार ।
होलऽ जाय छौं बन्द घरेलू,
सब रोजी---रोजगार ।।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ ऐलऽ
नेता सब खुशहाल ।
देश के जनता भूख मरै छय,
काम बिना कंगाल ।।

बापू जी के स्वदेदी सपना,
भेलै चकनाचूर ।
विदेशी के चंगुल में तड़पै,
सब किसान मजदूर ॥
सोछो भैया अभियो सब्भैं,
विदेशी क' ठुकराबऽ
घर के काम, खानदानी पेशा,
आपनऽ सब अपनाबऽ
बढ़िया घटिया जहिनों भी छय,
स्वदेशीं हमरऽ शान ।
स्वाबलम्बी होल्है स' आपनऽ
भारत देश महान ॥

★ 'अंग प्रिया' मार्च ९९ अंक में प्रकाशित

---

स्वदेशीं अपनाबऽ हो भैया ! स्वदेशी अपनाबऽ ।
देश के दुश्मन सदा विदेशी, ओकरा सब ठुकराबऽ ।
धन्य छय आपनऽ देश के माँटी, आरु गंगा पानी ।
जेकरऽ सेवन सें भागै छय, देहऽ के परेशानी ॥

---

# स्वदेशी अपनाबऽ

सुनऽ—सुनऽ द' क' ध्यान।
स्वदेशी अपनाना बड़ा काम छय महान।
कोका कोला, पेप्सी, लिप्टन के टाइगर टी।।
क्रिस्टल,फ्लोरा, वाइटल, सनड्राप, डालडा घी।।
सनलाइट, सर्फ, एरियल, विदेशी सामान।
सुनऽ—सुनऽ द' क' ध्यान।।
विमको, टिक्का आरू होमलाइट, शिप सलाय,
लक्स, लिरिल, डेटोल, रेक्सोना, लाइफ बॉय,
पेप्सोडेण्ट, कालंगेटे क' समझऽ नैं शान।
सुनऽ—सुनऽ द' क' ध्यान।
आपनऽ देशी साबुन कोनों नैं छय बेकार।
चन्द्रिका,चन्दन,कुमकुम,नीम,रोज, केशनिखार।।
निरमा बाथ, स्वास्तिक आरु ब्यूटी अफगान।
सुनऽ—सुनऽ द' क' ध्यान।।
देशी लाल मंजन, लेजर, अशोक, टोपाज,
बिस्कुट पालको, पारले, अप्सरा, मेघराज।
वनस्पत्ति गगन, धारा, रथ, गोपी, हनुमान।।
सुनऽ—सुनऽ द' क' ध्यान।
जीप टार्च, बैट्रो, सूर्या, एंकर आरु बजाज।
इमामी, प्लस, फेना, हरबल की कम छय आज।।
दही, दूध, लस्सी, मट्ठा पर हमरा अभिमान।
सुनऽ—सुनऽ द' क ध्यान।।
शिककाई आगू मेडीकेयर छय बेकार।
घटिहै चीजऽ के टी॰ वी॰ करे छय परचार।।
अपनाबऽ छोड़ी मैगी, इण्डाना, प्रिया, पान।
सुनऽ सुनऽ द' क' ध्यान।।

# परिवार नियोजन

बीसवीं सदी के अन्तिम वर्ष,
ग्यारह मई गुरूवार,
एक बजे के बाद जनसंख्या,
हौलै अरब सें पार।
देश केरऽ ज्ञानी—विज्ञानी,
करै छय खूब बिचार।
हाय धरती हेतना लोगऽ के,
केनाँ क' सहतै भार॥
जनसंख्या केरऽ नियत्रण ल त'
सोचै खूब सरकार।
देश के जनता नें जगतें त',
सोचलऽ बात बेकार॥
अभियो जों मटियेथै रहभों,
देश रसातल जैतै।
शेष नाग हेतना बोझऽ सें,
थोड़े नें औकतैतै॥
अपनाभो परिवार नियोजन,
देश के दशा सुधारऽ।
अपनाँ हाथें काम जे होतै,
दोसरा पर नें टारऽ॥

# भावना

चाँद हँसै छय की कानै छय,
इ कोइये थोड़े जानै छय।
आपनऽ सुख—दुख साथें सब्भैं,
ओकरा त' एन्हैं सानैं छय।।

धरती के परिकरमा करना,
नैं केकरहौ देखी क' जरना,
भला-बुरा के भेद छोड़ी क'
विपदा सब्भे जन के हरना।

हाय परोपकारी दुनिया म'
ऊँच-नीच नैं पहिचानै छय।
चांद हँसै छय की कानै छय,
इ कोइये थोड़े जानै छय।।

विरह के आग म' जे जललऽ छय,
चिन्ता म' जे वेशी गललऽ छय,
लाख छानै छय खाक मगर,
नहीयें कुछ संकट टललऽ छय,

आपनें दुख सें दुखी चाँद क'
लोर बवैतं बें मानै छय।
चाँद हँसै छय की कानै छय,
इ कोइये थोड़े जानै छय।।

☆

# अबरी झरियाँ लेलकै जान

झरिया अबरी अहिनों पड़लै,
बूटो, गेहूं खेथैं सड़लै ।
खेसाड़ी, रैंचा एन्हैं गेलऽ
मौसरी, खिकना गोबर भेलऽ
गेल्हौंन सबसें पहिनें धान ।
अबरी झरियां लेलकै जान ॥

तोड़ै गाछ आमी के मंजेर । हवा चलाबै अहिनों खंजर,
गाछी म' झलकै कहुँन आम । भूललऽ सब्भे आमी के नाम ॥
खेलकै अबरी सब तूफान । अबरी झरियाँ लेलकै जान ॥

पर्यावरण प्रकृति बिगाड़ै । रोजे-रोजे गाछ उखाड़ै ॥
ओकरा सें पेतऽ कौनें पार । ओकरा सें करतऽ कौनें मार ॥
पछताबै घर बैठी किसान । अबरी झरियाँ लेलकै जान ॥

जोत-कोड़ के नैं दै मौका ।
जेठ—बैसाख चलाबै नौका ॥
बीचड़ऽ-बौग नैं बून' दै छय ।
घास—फूस नैं चून' दै छय ॥
अछार के सब करै जुगान ।
अबरी झरियां लेलकै जान ॥

सुख-खखड़ऽ जेन्हैं हुवै धरती, बौड़ं खेत जोतैल परती ।
हुथड' सें एल्हों अंबर-बौखी, देथौं सबक' एकदम हौको ॥
तोड़थौं जे छऽ सीना तान । अबरी झरियां लेलकै जान ॥
बीचड़ऽ जे कि परिये देलकै । झगड़ा मोल झरिया स' लेलकै।
रोजे खेतऽ म' मरथौं पानी । चलथौं नैं तोरऽ मन मानी ॥
उपलऽ जाय-जाय शान-बिहान । अबरो झरियां लेलकै जान ॥

# आरति गीत

सब हिलो-मिली के नारायण की
आरति हम आज उतारै छी।
आरति हम आज उतारै छी,
हम आपनऽ अरज सुनाबै छी।
आरतहर आरत हरण करऽ
आरतजन शोर मचाबै छीं।
अपने कर सुन्दर थारिलिये,
आरु बाति कपूर की बारिलिये ॥
भय भंजन भव भय दूर करऽ
हम बार—बार गोहराबै छी।
प्रभु शरण में भक्त जे आये कभी,
यहां मन वांछित फल पाये सभी।
दुख—दर्द—दारिद्रय दूर करऽ
दुखी जन आज पुकारै छी ॥

# भोला के दुअरिया

भोला बाबा तो हेरो दुअरिया ॥
अरजिया करै हो लोगाबा।
दूर देशवा से आके तोहरो नगरिया,
कन्धवा पे लेके भरी-भरी के गगरिया।
कहिया भोला हेरभो नजरिया। अरजिया करै हो लोगबा ॥
कितने बड़े—बड़े आई के दुखिया,
बनके जात यहां से सुखिया।
हमरा बेरी खोलिहो केबड़िया। अरजिया करै हो लोगबा ॥
अक्षत, चन्दन, बेल को पाती,
ले—ले अरज सुनाये दिन—राती।
पहिरे वसन केशरिया। अरजिया करै हो लोगबा ॥

# कवि हीरा प्र० हरेन्द्र एक परिचय

● कवि, गीतकार, नाटककार, कहानीकार, मिलनसार प्रतिष्ठित हिन्दी आरु अंगिका के रचनाकार सरस्वती के वरदपुत्र श्री हीरा प्रसाद हरेन्द्र जी क' अंगिका के द्वारी पर नै अंगना म' हार्दिक अभिनन्द करै छी। यह' रंग हुनी अंगिका के साहित्य भण्डार क' भरतें रहै, अंगिका क' गौरव दिलतें रहै। रचनाकार के परिचय त' हुनक रचनें स' होय छै। दंगली शुभ कामना के बाद हम्म' कवि हरेन्द्र जी के भीतरिया परिचय भी करना जरुरी समझै छी।

जन्म तिथि –6—9—1950 (कटहरा, सुलतानगंज)

पिता—स्व० विभीषण प्रसाद (भागलपुर)

सम्प्रति—प्रधान अध्यापक प्राथमिक विद्यालय अराजी दो स्तंती गोराडीह, भागलपुर

सम्मान आरो प्रशस्ति पत्र—

प्रगति शील लेखक संघ एवं यात्रा द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ ईशीपुर, बाराहाट द्वारा (कविरत्न) उपाधि से सम्मानित।

रचना प्रकाशित पत्रिकाएँ – बाल प्रभात, अंग माधुरी, शिक्षा लोक, अंगप्रिया, नई आजादी उद्घोष, जागरण, बगुला, क्रान्ति पुत्र अंगी प्रभा, नालन्दा दर्पण, नई बात, कहीं और सबेरा, ( सकलन ) चेतना ( संकलन ) तथा एलेक्ट्रो हेमियो किरण आदि पत्र –पत्रिका आरो मंच प्रसारित एवं प्रकाशित

नया साल २००१

रामावतार राही

[ सम्पादक बगुला ]

★ पुस्तक प्राप्ति – क्रान्ति पुत्र परिवार [ सुलतानगंज ]